शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir

अक्टूबर २०२०, संस्करण ३५

परस्पर एक विचार से मिलकर चलो, परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करो। तुम लोगों का मन समान होकर ज्ञान प्राप्त करे।

प्रिय आत्मन् ! सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्धमार्ग पत्रिका का पैंतीसवाँ अंक प्रस्तुत है। इस अंक में महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा शान्ति मन्दिर, मगोद में दिये गये प्रवचन के कुछ अंश प्रस्तुत हैं।

॥ ॐ गुरु ॥

बाबा मुक्तानन्दजी के शब्दों में आप सभी का बड़े प्रेम और सम्मान के साथ हार्दिक स्वागत। शास्त्र हमें एक साथ चलने, बात करने और व्यवहार करने के लिए उपदेशित करते हैं। शास्त्रों के अनुसार हमें सदैव एक-दूसरे के साथ परस्पर व्यवहार में एकरूपता लानी चाहिए। ऋग्वेद में कथन है-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

हे स्तोताओ !(स्तुति करने वाला) तुम परस्पर एक विचार से मिलकर चलो, परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करो। तुम लोगों का मन समान होकर ज्ञान प्राप्त करे। जिस प्रकार पूर्व के लोग एकमत होकर ज्ञान-सम्पादन करते हुए सेवनीय ईश्वर की उत्तम प्रकार से उपासना करते थे, उसी प्रकार तुम भी एकमत होकर अपना कार्य करो, धनादि ग्रहण करो।

जब हम जीवन में एक साथ कार्य करते हैं तो वह कार्य सदैव अच्छी प्रकार से सम्पन्न होता है और उस कार्य में भले ही कितने भी विघ्न आएँ हम कभी भी घबरा नहीं सकते क्योंकि हमारे पास संगठन है और वह संगठन बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी हमें धैर्य के साथ टिके रहने की शक्ति प्रदान करता है।

बाबाजी एक कथा कहा करते थे कि किसी गाँव में एक वृद्ध रहा करता था उसके चार बेटे थे जो हमेशा लड़ते-झगड़ते रहते थे। वृद्ध के पास सम्पत्ति काफ़ी थी इसलिए वह हमेशा चिन्तित रहता था कि मेरे मरने के बाद मेरी इस सम्पत्ति और मेरे पुत्रों का क्या होगा? ज्यादा वृद्ध होने पर जब उसे लगा कि अब वह ज्यादा दिन जी नहीं पाएगा तो उसने अपने सभी बेटों को अपने पास बुलाया और लकड़ियों का एक गट्ठर सभी को देकर कहा कि इन लकड़ियों को तोड़ो। सभी ने बारी-बारी से उस गट्ठर को तोड़ने की कोशिश की पर कोई भी उसको तोड़ नहीं सका तब उस वृद्ध ने एक-एक लकड़ी अपने चारों पुत्रों को देकर तोड़ने को कहा तो सबने झट से सारी लकड़ियाँ तोड़ दीं। वृद्ध ने सभी से कहा कि जब तक इन लकड़ियों का समूह था तुम में से कोई भी इस गट्ठर को तोड़ नहीं सका परन्तु जैसे ही ये लकड़ियाँ अलग-अलग हुईं सबने आराम से इनको तोड़ दिया। इसी प्रकार जब तक तुम आपस में झगड़ते रहोगे और एक साथ नहीं रहोगे तो कोई भी तुम्हारा आराम से अनिष्ट कर सकता है परन्तु जब तुम एक साथ रहोगे तो कोई भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। कहने का तात्पर्य ये है कि हमारे समाज में साथ रहने, साथ चलने का महत्व इसलिए भी है कि जीवन में व्यक्ति कभी अपने को अकेला महसूस ना करे। अकेलेपन की बीमारी जिसे हम मान नहीं रहे हैं या पहचान नहीं रहे हैं और जिसका इलाज है भी या नहीं ये भी नहीं पता हमारे समाज में भी आ गई है। दादा-दादी, नाना-नानी, बेटा-बहू अकेले हो गये, बेटी-दामाद, बच्चे अकेले हो गये और सब कहते हैं कि मैं अकेला हो गया, पता नहीं हम कब तक अकेले रहेंगे। व्यक्ति संगति चाहता है और शायद इसी कारण हमारे गुरुजनों ने सत्संग प्रारम्भ किया होगा कि जब भी मिलो सत्संग करो, जब भी साथ आओ सत् की चर्चा करो, कुछ अच्छी चर्चा करो।

व्यक्ति संगति चाहता है और शायद इसी कारण हमारे गुरुजनों ने सत्संग प्रारम्भ किया होगा कि जब भी मिलो सत्संग करो, जब भी साथ आओ सत् की चर्चा करो, कुछ अच्छी चर्चा करो।

सद्गुरु के सान्निध्य में यदि हम सोचते हैं कि हमें क्या मिलता है तो जब हम इस पर गहन चिन्तन करेंगे तो पता चलेगा कि हमें प्रेम ही मिलता है।

जीवन में भले ही कितने भी कष्ट हों सत्संग का त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे अपने कार्य में धैर्य, तटस्थता, मन में निश्यय बुद्धि उत्पन्न होती है क्योंकि हमारे शास्त्रों में कहा गया है- **निश्चयात्मिका बुद्धिः** अर्थात् बुद्धि में सदैव ये निश्चित होना चाहिए कि मुझे सत् का ही संग करना है। मैं हमेशा लोगों से कहता हूँ कि यदि आपका शरीर और मन स्वस्थ रहेगा तो फिर आपको किसी के भी पास जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि आज सम्पूर्ण विश्व में व्यक्ति खो गया है उसे पता हीं नहीं कि उसे वास्तव में करना क्या है? सभी कहते हैं कि इसका कोई इलाज नहीं है, कोई दवाई नहीं है परन्तु मैं कहता हूँ कि इसका एकमात्र इलाज है प्रेम। आप सभी को प्रेम दो और देखो कि आपके जीवन की बहुत सारी समस्याएँ अपने आप ही ठीक होने लग जाएँगीं।

एक बार एक व्यक्ति किसी डॉक्टर के पास अपनी मानसिक समस्या लेकर गया तो डॉक्टर ने कहा कि तुम प्रेम दो तो उसने पूछा कि यदि ये उपाय न चले तो फिर क्या करना है तो डॉक्टर कहता है कि खुराक दोगुनी कर दो यानि डोज़ डबल कर दो। डॉक्टर हमेशा हमसे यही कहता है कि दवा सुबह लो, दोपहर लो, शाम को लो और यदि इससे भी आराम न मिले तो दवा की मात्रा बढ़ा दो। कहने का तात्पर्य यह है कि आप अपने प्रेम को बढ़ाओ जो लोग ये सोचते हैं कि मैं बहुत प्रेम करता हूँ या करती हूँ तो मैं उनसे कहूँगा कि आप अपने प्रेम का विस्तार करो। सद्गुरु के सान्निध्य में यदि हम सोचते हैं कि हमें क्या मिलता है तो जब हम इस पर गहन चिन्तन करेंगे तो पता चलेगा कि हमें प्रेम ही मिलता है। हम अपने दैनिक जीवन में जो भी वस्तु उपयोग में लेते हैं उसे प्रेम से उपयोग में लें, जिस व्यक्ति के साथ हम अपने कार्यालय में कार्य करते हैं उसके साथ प्रेम का सम्बन्ध बनाएँ, घर के सभी सदस्यों के साथ हमारा प्रेम पूर्ण व्यवहार होना चाहिए। लोगों को लगता है मैं केवल उनसे ही प्रेम करूँ जिन्हें मैं चाहता हूँ परन्तु शास्त्र कहता है हर उस व्यक्ति से प्रेम करो जो तुम्हारे जीवन में किसी न किसी रूप में आता है। सद्गुरु के प्रेम के विषय में कबीरदास जी कहते हैं-

साधो, सो सतगुरु मोंहि भावै।
सत्त प्रेम का भर भर प्याला, आप पिवै मोंहि प्यावै।

परदा दूर करै आँखिन का, ब्रह्म दरस दिखलावै।
जिस दरसन में सब लोक दरसै, अनहद सबद सुनावै।
एकहि सब सुख-दु:ख दिखलावै,
सबद में सुरत समावै।
कहैं कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद परसावै।

अर्थात् कबीरदास जी कहते हैं कि मुझे वो सद्गुरु अधिक प्यारा लगता है जो सच्चे प्रेम का प्याला भर-भर कर खुद भी पीता है और मुझे भी पिलाता है। मेरी आँखों के सामने जो अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है उसे हटाकर ब्रह्म के दर्शन कराता है। जिस सद्गुरु के दर्शन से ही सभी लोकों के दर्शन हो जाते हैं और जो सद्गुरु मुझे निरन्तर ज्ञान प्रदान करते रहते हैं, ऐसे सद्गुरु जो मुझे सुख और दु:ख में एक ही भाव से जीना सिखाते हैं और उनके प्रत्येक शब्द में मुझे ब्रह्म का दर्शन होता है ऐसे सद्गुरु के मिलने पर किसी का भय नहीं रहता और वे जीवन को निर्भय बनाकर अपने शिष्य को उच्च पद प्रदान करते हैं। प्रत्येक मनुष्य कहता तो है कि उसके अन्दर प्रेम भरा हुआ है परन्तु उसके अन्दर कितना प्रेम है ये पता लगता है उसके व्यवहार से जो वह अपने साथियों के साथ या जो भी उसके सम्पर्क में आता है उसके साथ करता है।

मुझे वो सद्गुरु अधिक प्यारा लगता है जो सच्चे प्रेम का प्याला भर-भर कर खुद भी पीता है और मुझे भी पिलाता है।

एक कहानी के माध्यम से आपको समझाने का प्रयास करूँगा कि मधुमक्खी उड़ती है और पुष्प पर जाकर बैठती है और उसमें से वह शहद बनाती है। मक्खी है पर उसे पुष्प दिखाई नहीं देता वो यूँ ही उड़ती जाएगी और जाकर बैठेगी कचरे के ऊपर। पुष्प के बगीचे में प्रत्येक पुष्प पर बैठकर मधुमक्खी पराग एकत्रित करती है और शहद बनाती है परन्तु मक्खी को उस पुष्प से कोई लेना देना नहीं है वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर उस अमृततत्व के गुण-लक्षण हैं और प्रत्येक व्यक्ति के पास कचरे के प्रति आकर्षण होने का गुण-लक्षण है। हर किसी के पास स्वयं की मति होती है कि वो विचार करे कि उसे किस के प्रति आकर्षण करना है, उसे अमृतत्व की ओर जाना है या कचरे की ओर। श्रीगुरुगीता में एक श्लोक आता है-

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति: पूजामूलं गुरोर्पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा॥

हमारा मन कहाँ रहना चाहिए, मन कहाँ लगाएँ? तो हमारा मन लगना चाहिए उस मूर्ति पर जहाँ से हमें

जिसकी तुम पूजा करते हो, आराधना करते हो कभी उससे भी तो पूछो कि तुम कैसे हो? हम तो चाहते हैं कि वो हमसे सम्वाद करें तो हमें भी उनके साथ सम्वाद करना पड़ेगा।

आनन्द की प्राप्ति हो, जिससे हमें प्रेम हो। गुरुमूर्ति से ये नहीं सोचना चाहिए कि सामने जो फोटो या मूर्ति रखी है वो। गुरुमूर्ति क्या है तो वो है गुरु से प्राप्त ज्ञान, वो जो हमें ज्ञान देते हैं वही हमारे जीवन को सार्थक करता है। तो ध्यान करना है ज्ञान पर परन्तु हम तो फँस जाते हैं मूर्ति पर अर्थात् हम जो स्थूल रूप में मूर्ति को देखते है उसी का ध्यान करने लग जाते हैं। आगे कहते हैं पूजामूलं गुरोर्पदम्- हम सोचते हैं कि मैं गुरु के चरणों को जल से, दूध से, पञ्चामृत इत्यादि द्रव्यों से धोकर और उस जल को अपने घर, अपने ऊपर छिड़क लूँ तो मेरा उद्धार हो जाएगा। जब तक मनुष्य का दिमाग नहीं बदलता, जब तक वो कचरे की ओर आकर्षित रहता है तब तक कोई उपयोग नहीं है। बहिरंग तो हमने पूजन इत्यादि सब कुछ कर लिया परन्तु जब तक अन्तरंग उस शहद के प्रति, उस अमृततत्व के प्रति आकर्षित नहीं होता तब तक ये सारे आडम्बर किसी भी काम के नहीं हैं। हम प्रतिदिन अपने आराध्य की पूजा करते हैं और पूजा के बाद सोचते हैं कि सब ठीक हो जाएगा। मैं कभी-कभी छात्रों को कहता हूँ कि जाकर भगवान की मूर्ति से पूछो कि कैसे हो तो वे हंसने लगते हैं तो मैं कहता हूँ कि अरे जिसकी तुम पूजा करते हो, आराधना करते हो कभी उससे भी तो पूछो कि तुम कैसे हो? हम तो चाहते हैं कि वो हमसे सम्वाद करें तो हमें भी उनके साथ सम्वाद करना पड़ेगा। आप देखो चाहे मनुष्य हो या फिर आपका इष्टदेव जिसे आप मानते हैं उसके साथ सम्वाद आवश्यक है। तुकाराम महाराज कहते हैं कि देखो मनुष्य कितना अन्धा है कि जो सत्य, जीता-जागता देवता है उसको तो भूल गया, हम एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं आप स्वयं ही देखो। **मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यम्-** हम गुरु से चर्चा करते हैं, उनसे पूछते हैं, फिर हम उनसे दुबारा पूछते हैं कि आपने यही बोला न? हम कहते हैं कि मैं पक्का कर रहा था कि आपने जो बोला वही मैंने समझा या कुछ और। फिर भी हमें तसल्ली नहीं होती है तो हम कहते हैं आप और सोच लो फिर मैं अगले रविवार आता हूँ। लेकिन यहाँ कहा गया है कि ध्यानमूलं गुरोर्वाक्यम् अर्थात् गुरु तो वही बोलेंगे चाहे तुम आज सुनो, अलगे रविवार सुनो, एक बार सुनो या दस बार सुनो गुरु का वाक्य सर्वदा एक ही

हमें लगता है बस सिर पर हाथ फिरा देने से उसकी बुद्धि खुल जाएगी। कहा जाता है कि काली वस्तु को कितना भी धो दो वो सफेद नहीं होती।

रहता है। हम चाहते हैं कि वो कुछ बदल कर बोलें परन्तु वो कुछ बदलते ही नहीं हमने उनको कितना समझाया परन्तु उनका एक ही वाक्य हमेशा हमारे लिए उपदेश रूप में रहता है। आप सोचिए, विचार कीजिए कि कितना गहन श्लोक है परन्तु हम इसे कितनी सरलता से पढ़ लेते हैं फिर उसके अनुसार वास्तविक जीवन जीने के लिए इसकी गहनता को समझना जरूरी है। अन्त में आता है **मोक्षमूलं गुरोर्कृपा-** हम गुरु के पास आते रहते हैं और कहते हैं कि आशीर्वाद दो, अच्छा आशीर्वाद दो। अधिकांश मैं देखता हूँ कि जब लोग छोटे बच्चों को लेकर आते हैं तो वह बच्चा आता है और प्रेम से प्रणाम करके चला जाता है फिर माता-पिता के साथ जब बच्चा आता है तो उसे लगता है कि मैंने तो अपना प्रणाम कर लिया फिर माता-पिता कहते हैं कि प्रणाम कर, बच्चा फिर से प्रणाम करता है उसके बाद वो उसका सिर पकड़ कर जमीन पर पटकते हैं कि अच्छे से प्रणाम कर तो फिर बच्चे को गुस्सा आता है और वो रोने लगता है उसको लगता है कि मैं अपना कर्तव्य निभा कर गया हूँ फिर जो भी गुरु होते हैं हम उनको बोलते हैं कि इसके माथे पर हाथ फिरा दो यानि उस बच्चे ने खुद से जो प्रणाम किया, हमारी जबरदस्ती से जो प्रणाम किया उससे हमारी तृप्ति नहीं होती है, हमें लगता है बस सिर पर हाथ फिरा देने से उसकी बुद्धि खुल जाएगी। कहा जाता है कि काली वस्तु को कितना भी धो दो वो सफ़ेद नहीं होती। अर्थात् जिस मन को उस परमात्मा का आनन्द लेना नहीं आता उसे कितना भी आशीर्वाद दो उसका मन सदैव विचलित ही रहेगा। जब तक हमारी श्रद्धा गुरु के ऊपर, गुरु के वाक्यों पर नहीं रहेगी तब तक हम कितना भी प्रणाम करें उसका कोई लाभ नहीं होगा।

एक कहानी के माध्यम से समझाने का प्रयत्न करूँगा कि एक गाँव में लम्बे समय तक वर्षा नहीं होती है तो लोग कहते हैं कि चलो मन्दिर और पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि करेंगे और सभी मन्दिर की ओर चल देते हैं तो एक बच्चा छाता लेकर चल देता है। लोग पूंछते हैं कि ये छाता क्यों तो बच्चा कहता है कि वर्षा होगी इसलिए। उस बच्चे की बात सुनकर सब हंसने लगते हैं कि इसको क्या लगता है कि इतने लोग मन्दिर जाएंगे तो बारिश होगी परन्तु जब सभी मन्दिर

जाकर प्रार्थना करते हैं तो बारिश होती है तब गाँव का जो मुखिया होता है वो कहता है कि यदि हमें लगता है वर्षा हमारी प्रार्थना के कारण हुई है तो ये गलत है क्योंकि वर्षा हमारी प्रार्थना के कारण नहीं बल्कि उस एक आठ साल के बच्चे की श्रद्धा के कारण हुई है कि जब इतने लोग जाकर प्रार्थना, पूजा, अनुष्ठान करेंगे तो बारिश अवश्य होगी। तो कहने का अभिप्राय यही है कि जब तक हम जिसे भी अपना इष्ट मानते हैं उनके वचनों पर श्रद्धा नहीं होगी हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

जब तक हम जिसे भी अपना इष्ट मानते हैं उनके वचनों पर श्रद्धा नहीं होगी हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

पुन: आप सभी का बड़े प्रेम और सम्मान के साथ हार्दिक स्वागत।

॥ सद्गुरुनाथ महाराज की जय ॥

।। सर्वे सन्तु निरामया: ।।